89. 91.

प्रश्न:- मेघदूत का प्रकृति चित्रण प्रस्तुत करें, या
पूर्वमेघ के आधार पर कालिदास का प्रकृति प्रेम निरूपित करें।

उत्तर:- मेघदूत की रचना के पीछे एक विराट प्राकृतिक आधार है। यह एक मंजुल छायावादी काव्य ग्रन्थ है। छायावाद के अस्तित्व और व्यापकत्व की आधार भूमि है प्रकृति। इस प्रकार भावप्रवण मनीषि कवियों के लिए कलियाँ मुस्कुराती हैं, नदियाँ गाती हैं, रात रोती है आकाश तारों को मणि लुटाता है, लताएँ पत्तों की पायलें बजा बजाकर पवन के संकेत पर नाचती हैं। छाया का तात्पर्य है प्रकृति की आत्मा से। मेघदूत में प्रकृति चित्रण अतीव संवेदनात्मक प्रणाली पर हुआ है। अतः उसके प्रत्येक प्रकृति चित्र में अवतरित वेदना की अनाविल आर्द्रता अभिनव बनी रहती है। मेघदूत की काव्यकला का मेरुदण्ड प्रकृति है। मेघदूत की काव्यकला में संख्यातीत सरस और सुरंग प्रकृति चित्र है

पूर्वमेघ तो प्रायः प्रकृति के ही चित्रों का एक विशाल संग्रह है। सर्वप्रथम प्रकृति का एक महत्वपूर्ण अंश मेघ ही कभी तो 'चिर विरह' के कारण गर्म गर्म आँसू गिराते हुए अपने प्रिय सखा शैल को गले लगाता हुआ, कभी किनारे के वृक्षों से गिरे हुए पत्तों के रूप में विरह से पीली निर्विन्ध्या की कृशता को दूर करता, कभी मथनी की किलोल के रूप में गंभीरा के चंचल चित्तवन को जाने देता हुआ चित्रित हुआ है। कहीं प्रिय समागम के सुख लोभ से बगुलियाँ पंक्ति बाँधकर आकाश में उड़ रही हैं, कहीं शिलीन्ध्रों से रोमांचित पृथ्वी जुती जाती हुई प्रथम वृष्टि के कारण महक छोड़ रही है, कहीं बाँकड़ी भरनी भृगियाँ मेघ को मार्ग बता रही हैं। पूर्वमेघ के माध्यम से महाकवि कालिदास ने भारतवर्ष की प्राकृतिक छटा का अभिराम वर्णन कर बाह्य प्रकृति के सौन्दर्य एवं कमनीयता का मनोरम चित्र खींचा है।

आषाढ़ का प्रारंभ है। काले काले बादल के टुकड़े आसमान में उड़ते जा रहे हैं, विरहियों के हृदय में संचित याद को कुरेदते हुए प्रिया विश्लेषित यक्ष भीतर ही भीतर आँसुओं का घूंट पीकर बड़ी मुश्किल

से अपने को संयत कर पाता है। वर्षा के प्रथम मेघ को देखकर प्रेम व्यापार में मग्न सखियों का दिल भी कैसा कैसा होने लगता है, तो जिसकी प्रणयिनी दूर हो उसकी मनोव्यथा की क्या कथा।

मेघदूत का यह पहला प्रकृति-चित्र है जिसमें कवि की वेदनाभूति की तीव्रता कोमल भावों को सहसा आवर्जित करती है।

मेघदूत की प्रकृति के तीन ही प्रतिनिधि- मुख्यतया वर्णित हुए हैं - मेघ, नदी और पर्वत। इन्हीं तीनों में कवि ने प्रकृति की ऐसी मोहिनी माया का समावेश कर दिया है कि उन्हें हमारी आँखें अपलक देखती रह जाती हैं।

यद्यपि मेघदूत में मूलतः वियोग शृंगार का ही प्राचुर्य है, फिर भी प्रकृति-चित्रों को उपस्थित करते समय कवि ने प्रेम की वेदना से मधुर संयोग शृंगार को ही वर्णन का मुख्य आधार बनाया है। संयोग सुख की वास्तविक अनुभूति वियोग वेदना में ही संभव है। विन्ध्याचल की तलहटी में दूर तक फैली नर्मदा, हाथी के अंग पर चित्रकारी के रेखाओं के समान सुशोभित हो रही है। मेघ जंगली हाथियों की सुगन्धिवाले मद से नर्मदा के जल का पान करता है।

एकमात्र पत्नी की मधुर स्मृति से भरे हुए वियोगी यक्ष के हृदय में केवल संयोग के ही सपने घिर आते हैं। यद्यपि वह स्वयं वियोग दग्ध है तथापि मेघ को अलका के मार्ग में संभोग सुख पाने का निर्देश करता है।

विदिशा नाम से सुविख्यात राजधानी में जाकर उसे शीघ्र ही कामित्व का अशेष फल मिल जाएगा क्योंकि वह वेत्रवती नदी के चंचल लहरों वाले एवं मधुर जल का ऐसा पान करेगा जैसे तेवड़ी चढ़े एवं मधुर मुँह को कामुक पीते हैं।

नदी की सुरम्यता ने उसके मधुमय अवदानों ने कवि को इतनी विमुग्धता और तन्मयता प्रदान की है कि नदी नायिका सी मालूम होती है।

उज्जयिनी के रास्ते में निर्विन्ध्या नदी बहती है। तरंगाभिघात से शब्द करने वाले हंस, सारस आदि की कतारें नदी की घुंघरू लगी कमरबन्ध जैसी है, इस प्रकार निर्विन्ध्या को संगमोत्कंठिता नायिका की तरह मेघ प्रियतम के समक्ष कवि ने प्रस्तुत किया है। पुनः कवि ने निर्विन्ध्या को विरहिणी के रूप में भी चित्रित किया है। कवि का विचार है कि मेघ प्रियतम का सौभाग्य है कि उसके लिए कोई घुल-घुलकर क्षीण हुई जाती है तब मेघ का यह धर्म हो जाता है कि वृष्टिपात द्वारा उसकी कृशता दूर करे। महाकवि की प्रवृत्ति भावों को उद्दीप्त करने के लिए प्रकृति के नवणीय चित्र उपस्थित करने की ओर अत्यधिक आग्रह रखती है यही कारण है कि उन्होंने प्रकृति के उपादानों का आलंबन रूप में ग्रहण कर काव्य को चिर नूतन सौन्दर्य प्रदान किया है।

नीले रंग वाले जलरूपी वस्त्र को जो कि तटरूपी नितंब से सरके हुए हैं उस गंभीरा नदी पर झुके हुए किनारे के वेंत की टहनियां इस प्रकार प्रतीत हो रही हैं मानो नायिका अपनी नग्नता छुपा रही है।

तस्याः किंचित्करधृतमिव प्राप्तवानीरशाखं
हृत्वा नीलं सलिलवसनं मुक्तरोधो नितम्बम्।
प्रस्थानं ते कथमपि सखे लम्बमानस्य भावि
ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः॥

तीरत्यक्ता गंभीरा नदी को इस प्रकार विवृतजंघा नायिका का रूप देकर कवि ने अनुपम प्रकृति चित्र खींचा है, जिसमें दैहिक सौन्दर्य का अनिवार्य आकर्षण है और वासना सत्य होकर बोलती है। उसकी प्रमाणातिशयता त्रिकाल सत्य है इसलिए इसकी उपेक्षा सर्वथा असंभव है।

हिमालय पर्वत पर इतने घने और ऊँचे देवदार के पेड़ हैं कि जब हवा चलती है तो

पेड़ों के तने आपस में रगड़ खाकर चिंगारी उत्पन्न करते हैं। यही चिंगारी भयानक दावाग्नि का रूप लेती है। यह है प्रकृति का संहारक पक्ष। प्रकृति के इस भयानक रूप के प्रति भी कवि उदासीन नहीं है।

मेघदूत के पूर्वार्द्ध में दो प्रकृति-चित्र मन को सर्वाधिक आकृष्ट करते हैं — पहला पर्वत पर मेघ और दूसरा नदी में मेघ। प्रकृति चित्रकार कालिदास ने दोनों चित्रों को अपनी प्रशस्त कल्पना की कूँची तथा खुलती हुई भावना के रंगों द्वारा प्रत्येक कविता में इस प्रकार चित्रित किया है कि वे हर बार नए लगते हैं।